श्री विष्णु भिकाजी कोलते

Shri Vishnu Bhikaji Kolte

श्री विष्णु भिकाजी कोलते, जिन्हें साहित्य अकादेमी अपने सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* से विभूषित कर रही है, हमारे समय में मराठी के अत्यंत विशिष्ट लेखक, समालोचक, शोधकर्त्ता और शिक्षाविद् हैं।

श्री कोलते का जन्म 22 जून 1908 को नारवेल (जिला बुलढाना, महाराष्ट्र) में एक सत्य-शोधक किसान परिवार में हुआ। आपने स्कूली शिक्षा मलकापुर और खामगाँव में प्राप्त की। मॉरिस कॉलिज, नागपुर से स्नातक होने के बाद श्री कोलते ने वर्ष 1931 में नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि तीन स्वर्ण पदकों के साथ प्राप्त की।

मराठी के सहायक प्रोफ़ेसर के तौर पर आपने किंग एडवर्ड कॉलिज (सम्प्रति विदर्भ महाविद्यालय) अमरावती में 1931 से 1934 तक, और मॉरिस कॉलिज (सम्प्रति नागपुर महाविद्यालय) नागपुर में 1944 से 1964 तक अध्यापन किया। आप विदर्भ महाविद्यालय, अमरावती के प्राचार्य भी रहे।

वर्ष 1972 तक शैक्षणिक जगत में निरंतर सक्रिय श्री कोलते मराठी के अध्ययन मण्डल के सदस्य और अभी हाल तक इसके अध्यक्ष थे; आप कला संकाय के सदस्य और तदुपरांत संकाय अध्यक्ष; नागपुर विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परिषद और शासी परिषद के सदस्य और इन सबके साथ ही चार विश्वविद्यालयों की शैक्षणिक परिषद और शासी परिषद के सदस्य भी रहे हैं। आप एक ऐसे शिक्षाविद् हैं, जिनका भारत और विदेशों के अनेक विश्वविद्यालयों के साथ बड़ा लाभदायक संबंध रहा है और जिन्होंने कई रूपों में उन्हें अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं।

यह एक रोचक तथ्य है कि आपकी पहली कृति *लव्हाळी* (1933) कविताओं का संग्रह है। आपने 1938 में एक नाटक भी लिखा था, *सोडचिठ्ठी* (1938)। *साहित्य संचार* (1965) संस्कृत और मराठी की कृतियों और कृतिकारों पर आलोचनात्मक लेखों का संकलन है। गहन अनुसंधान के फलस्वरूप लिखी गई दो पुस्तकें *श्री चक्रधर* (1952) और *भास्करभट्ट बोरीकर* (1935) साहित्यिक जीवनियाँ हैं। श्री कोलते ने अब तक बीस से अधिक कृतियों का प्रणयन किया है जिनमें प्रमुख हैं: *महानुभाव तत्वज्ञान* (1945), *महानुभाव आचारधर्म* (1948), *महानुभाव संशोधन* (दो खण्डों में, 1962, 1984), *प्राचीन मराठी साहित्य संशोधन* (1968), और *चक्रधरशेवटचे प्रकरण* (1982)।

महानुभाव पण्डितों ने तेरहवीं से सोलहवीं शताब्दी के बीच गद्य एवं पद्य लेखन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान किया था। लगभग पाँच सौ वर्ष

Shri Vishnu Bhikaji Kolte, on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today, is a most distinguished Marathi writer, critic, researcher and educationist of our time.

Shri Kolte was born on 22 June 1908 in Narvel (District Buldhana, Maharashtra State), a son of a Satyashodhak farmer. He had his school education in Malkapur and Khamgao. He took his B.A. from Morris College, Nagpur. He stood first in the M.A. examination of Nagpur university in 1931, carrying away three gold medals.

He taught as an Assistant Professor of Marathi in King Edward College (now Vidarbha Mahavidyalaya), Amravati (1931-44) and in Morris College (now Nagpur Mahavidyalaya), Nagpur (1944-64). He was the Principal of Vidarbha Mahavidyalaya, Amravati.

Till 1972, he was active in the academic world. He was a member and then chairman to the Board of Studies in Marathi, a member and later on Dean of the faculty of Arts, a member of the Academic Council and the executive council of Nagpur University as also of the Board of studies and the faculty of Arts in four universities. An academician who has had fruitful association with several universities in India and abroad, he has served them in different capacities.

Interestingly enough, his first book *Lavhali* (1933) was a collection of poems; he has also written a play, *Sodchitthi* (1938). *Sahitya-Sanchar* (1965) is a collection of critical articles on Sanskrit and Marathi books and authors. *Sri Chakradhar* (1952) and *Bhaskarbhatta Borikar* (1935) are literary biographies based on extensive research. Kolte has written not less than twenty books which include *Mahanubhava Tatvadnyana* (1945), *Mahanubhava Achardharma* (1948), *Mahanubhava Samshodhana* (two volumes—1962, 1984) *Pracheen Marathi Sahitya Samshodhana* (1968) and *Chakradhar Shevatache Prakaran* (1982).

Mahanubhava Pandits did a lot of significant prose and poetry writing during the period from 13th Century to 16th Century. The manuscripts about five hundred years old were originally written in a lesser known code language. Sri Kolte

पुरानी ये पाण्डुलिपियां एक अल्पज्ञात कूटभाषा में लिखी गई थीं श्री कोलते ने इसमें निहित प्रच्छन्न संकेतो का विश्लेषण किया और सुविस्तृत परिचय के साथ पहली बार इनका समीक्षात्मक सम्पादन किया। आपने जिन पंद्रह पुस्तकों का सम्पादन किया उनमें प्रमुख हैं : *उद्धव गीता* (1935), *रुक्मिणी स्वयंवर* 1940), *स्थान पोथी* (1937), *लीला चरित्र* (1978), *शिशुपाल वध* (1960), *श्री गोविन्द प्रभु चरित्र* (1944) और *वाचाहरण* (1953)। आपने मराठी एवं कन्नड के कई ताम्रलेखों और शिलालेखों का सम्पादन एवं विश्लेषण किया है।

आपके विपुल लेखन में 250 शोध-पूर्ण आलेख उल्लेख्य हैं जिनमें वैचारिक निबंध, प्रकाशित व्याख्यान, समालोचनात्मक भूमिकाएँ, अनुवाद, कालजयी ग्रंथों के पाठ-भाष्य और समकालीन विषयों पर लेखन सम्मिलित हैं। आप विभिन्न संस्थाओं के सदस्य रहे हैं जिनमें उल्लेख्य हैं : साहित्य अकादेमी (1956-61), केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार की एन.सी.सी. सलाहकार समिति, महाराष्ट्र सरकार का भाषा सलाहकार मंडल एवं डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर स्रोत सामग्री प्रकाशन समिति (महाराष्ट्र सरकार)। इनके अलावा आप वर्ष 1979 तक महाराष्ट्र सरकार के भाषा सलाहकार मंडल के अध्यक्ष पद पर भी रहे। आप राष्ट्रभाषा सभा, पुणे (महाराष्ट्र) के उपाध्यक्ष थे एवं मराठी विश्वकोश के सम्पादन मण्डल के सदस्य हैं। मराठी वर्तनी को सुगम और सरल बनाने की दिशा में आपके अप्रतिम योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। समस्त अनुच्चरित, जटिल एवं बोझिल अनुनासिक ध्वनियों को आपने हटा दिया।

मराठी साहित्य को अमूल्य योगदान के लिए महाराष्ट्र साहित्य संस्कृति मण्डल पुरस्कार से आप सम्मानित हो चुके हैं। वर्ष 1950 में आपको कमला नारायण स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ था। शासन साहित्य परिषद (म.प्र. सरकार) ने एक प्राचीन पाण्डुलिपि के सम्पादन के लिए आपको विशिष्ट सम्मान प्रदान किया था। उनके सम्मान में दो अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके शीर्षक हैं : *कोलते गौरवग्रंथ* और *संशोधनाची क्षितिजे*।

श्री कोलते विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं से संबद्ध रहे। आपने विदर्भ साहित्य सम्मेलन, गोंदिया (1948), अखिल भारत मराठी साहित्य सम्मेलन, भोपाल (1967), मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय परिषद, बम्बई (1950), और मुम्बई मराठी साहित्य संघ स्वर्ण जयंती के अवसर पर आयोजित समारोहों के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया।

विशिष्ट शोधकर्त्ता एवं शिक्षाविद् के साथ-साथ श्री कोलते एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्त्ता भी हैं। आप लोक सेवा शिक्षण मण्डल, मलकापुर (जिला बुलढाना) के संस्थापक सदस्य भी हैं। इसके साथ ही आप भ्रातृ मण्डल, नागपुर के भी संस्थापक सदस्य हैं, जो सामाजिक समस्याओं और सुधारों से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

वर्ष 1966 से 1972 तक श्री कोलते नागपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे। अखिल भारत महानुभाव परिषद ने वर्ष 1956 में आपको 'विद्यारत्न' की उपाधि से अलंकृत किया। वर्ष 1991 में भारत के राष्ट्रपति ने आपको 'पद्मश्री' से सम्मानित किया।

श्रेष्ठ विद्वान, शोधकर्त्ता एवं शिक्षाविद् के रूप में मान्य श्री विष्णु भिकाजी कोलते को साहित्य अकादेमी अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान करती है।

decodified and critically edited them for the first time with exhaustive introductions. Among the fifteen books he edited are *Uddhav Geeta* (1935), *Rukmini Swayamwar* (1940), *Sthan Pothi* (1937), *Leela Charitra* (1978), *Shishupal Vadha* (1960), *Shri Govind Prabhu Charitra* (1944) and *Vachaharan* (1953). He has also edited and interpreted a number of copperplate and stone inscriptions in Marthi and Kannada.

The vast corpus of his writing includes over 250 research articles, covering his essays, published lectures, critical prefaces, translations and commentaries on classical texts as well as contemporary writing. He has been a member of many institutions such as Sahitya Akademi (1956-61), Central Hindi Directorate, N.C.C. Advisory Committee (Govt. of India), Board of Literature and Culture (Govt. of Maharashtra, 1968-77, 1988-93), Language Advisory Board (Govt. of Maharashtra) and Dr. Babasaheb Ambedkar Source Material Publication Committee (Govt. of Maharashtra). Besides, he has been the president of Language Advisory Board (Govt. of Maharashtra) till 1979. He was the Vice-President of Rashtra Bhasha Sabha (Maharashtra), Pune and is on the editorial board of *Marathi Vishvakosh* (Marathi Encyclopaedia). Kolte's monumental work was on how to simplify Marathi orthography. He abolished all the unpronounced cumbersome nasal sounds.

Sri Kolte is a recipient of the Maharashtra Sahitya Sanskriti Mandal award which was conferred on him for his valuable contribution to Marathi literature. In 1950 he won Kamala Narayan Gold Medal. Shasan Sahitya Parishad (M.P. Govt.) honoured him with a special prize for editing an old manuscript. The two felicitation volumes published in his honour are *Kolte Gaurava Grantha* and *Sanshodhanachi Kshitije.*

Sri Kolte, who has been actively associated with a number of literary institutions, presided over Vidarbha Sahitya Sammelan, Gondia (1948), All India Marathi Sahitya Sammelan, Bhopal (1967), Mumbai Marathi Grantha Sangrahalaya Conference, Bombay (1950) and Mumbai Marathi Sahitya Sangh Golden Jubilee.

This eminent researcher and educationist is an active social worker. He is the founder-member of Lokseva Shikshan Mandal, Malakapur (Distt. Buldhana). He is also the founder-member of Bhratru Mandal, Nagpur which organises a variety of programmes on social problems and reforms.

From 1966 to 1972 he was the Vice-Chancellor of Nagpur University. All India Mahanubhava Parishad conferred on him the title 'Vidyaratna' in 1956. The President of India honoured him with 'Padmashree' in 1991.

For his eminence as a scholar, researcher and educationist, the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship, on Shri Vishnu Bhikaji Kolte.